



英精神品園訓



YUANJINGPINERVA

寓言精品 一百則

蘭輝 / 蘭濤 / 王偉 · 編著

北京燕山出版社

夜读精品系列

华 强 主编

寓言精品 200 则

兰辉 兰涛 王伟 编著

北京燕山出版社

夜读精品系列——寓言精品 200 则

华 强 主编

北京燕山出版社出版

(北京市东城区府学胡同 36 号)

河北廊坊胶印厂印刷

全国各地新华书店经销

开本 787×1092 毫米 1/32 · 印张 8 · 字数 168000

1991 年 8 月北京第一版 1991 年 8 月北京第一次印刷

ISBN 7-5402-0379-X / G · 0057

印数：18000 册 定价：3.70 元

目 录

| | | | |
|-----------|------|----------|------|
| 1 楚王好细腰 | (1) | 25 捕蝉老人 | (20) |
| 2 五十步笑百步 | (1) | 26 纪譖子养鸡 | (21) |
| 3 揠苗助长 | (2) | 27 东野稷败马 | (21) |
| 4 齐人乞墦 | (3) | 28 山木与鹅 | (22) |
| 5 子产被騙 | (4) | 29 林回弃璧 | (23) |
| 6 两人学奕 | (5) | 30 鲁少孺 | (24) |
| 7 激流凫水 | (5) | 31 匹石运斤 | (25) |
| 8 不驟手之药 | (6) | 32 神龟的命运 | (25) |
| 9 庖丁解牛 | (7) | 33 畏影恶迹 | (26) |
| 10 斥鷃笑鹏 | (8) | 34 舐痔结驷 | (27) |
| 11 浅井之蛙 | (9) | 35 杞人忧天 | (28) |
| 12 润辙之鲋 | (10) | 36 海上鸥鸟 | (29) |
| 13 望洋兴叹 | (11) | 37 朝三暮四 | (29) |
| 14 鬼匠神工 | (11) | 38 愚公移山 | (30) |
| 15 祭神劝猪 | (12) | 39 小儿辩日 | (31) |
| 16 卖弄的猴子 | (13) | 40 纪昌学射 | (32) |
| 17 任公子钓大鱼 | (14) | 41 国氏为盜 | (33) |
| 18 秀才盗墓 | (14) | 42 燕人返国 | (34) |
| 19 且女效颦 | (15) | 43 詛何钓鱼 | (35) |
| 20 鲁侯养鸟 | (15) | 44 扁鹊换心 | (36) |
| 21 抱瓮老人 | (16) | 45 高山流水 | (37) |
| 22 轮扁斫轮 | (17) | 46 傴师造人 | (37) |
| 23 凤凰与猫头鹰 | (18) | 47 造父习御 | (39) |
| 24 骷髅所思 | (19) | 48 郢雍视盜 | (40) |

| | | | | | | | |
|----|-------|-----|------|-----|--------|-----|------|
| 49 | 雕虫小技 | ……… | (41) | 76 | 郢书燕说 | ……… | (62) |
| 50 | 九方皋相马 | ……… | (41) | 77 | 无底的玉器 | ……… | (63) |
| 51 | 鲍氏之子 | ……… | (43) | 78 | 公孙仪不受鱼 | ……… | (63) |
| 52 | 宣王好射 | ……… | (43) | 79 | 黎丘丈人 | ……… | (64) |
| 53 | 田父弃玉 | ……… | (44) | 80 | 掩耳盗钟 | ……… | (65) |
| 54 | 和氏献璧 | ……… | (45) | 81 | 幽王击鼓 | ……… | (66) |
| 55 | 扁鹊治病 | ……… | (46) | 82 | 穿井得人 | ……… | (66) |
| 56 | 狗恶酒酸 | ……… | (47) | 83 | 祁黄羊举贤 | ……… | (67) |
| 57 | 滥竽充数 | ……… | (47) | 84 | 击磬者 | ……… | (68) |
| 58 | 买椟还珠 | ……… | (48) | 85 | 公息忌为组 | ……… | (69) |
| 59 | 射稽唱歌 | ……… | (48) | 86 | 牛缺遇盗 | ……… | (70) |
| 60 | 郑人买履 | ……… | (49) | 87 | 唇亡齿寒 | ……… | (70) |
| 61 | 自相矛盾 | ……… | (50) | 88 | 解疙瘩 | ……… | (72) |
| 62 | 守株待兔 | ……… | (51) | 89 | 颜回攫瓢 | ……… | (72) |
| 63 | 尉子请罪 | ……… | (51) | 90 | 一鸣惊人 | ……… | (73) |
| 64 | 为公不为私 | ……… | (52) | 91 | 掣肘 | ……… | (74) |
| 65 | 弥子瑕失宠 | ……… | (53) | 92 | 戎夷救门徒 | ……… | (75) |
| 66 | 智伯索地 | ……… | (54) | 93 | 法大于王 | ……… | (76) |
| 67 | 不死之药 | ……… | (55) | 94 | 景公求雨 | ……… | (77) |
| 68 | 乐羊食子 | ……… | (55) | 95 | 二桃杀三士 | ……… | (78) |
| 69 | 荀寅出亡 | ……… | (56) | 96 | 晏子的车夫 | ……… | (80) |
| 70 | 沮卫善辩 | ……… | (57) | 97 | 善辩的晏子 | ……… | (81) |
| 71 | 侏儒梦灶 | ……… | (57) | 98 | 自讨没趣 | ……… | (82) |
| 72 | 叔孙的悲剧 | ……… | (58) | 99 | 五不足恃 | ……… | (83) |
| 73 | 韩昭侯明察 | ……… | (59) | 100 | 川壅必溃 | ……… | (84) |
| 74 | 掩鼻计 | ……… | (60) | 101 | 惊弓之鸟 | ……… | (84) |
| 75 | 棘刺为猴 | ……… | (61) | 102 | 南辕北辙 | ……… | (85) |

| | | | | | | | |
|-----|--------|-------|-------|-----|---------|-------|-------|
| 103 | 画蛇添足 | | (86) | 130 | 田饶去鲁 | | (106) |
| 104 | 狐假虎威 | | (87) | 131 | 中天台 | | (107) |
| 105 | 鹬蚌相争 | | (87) | 132 | 以粒喂鸟 | | (108) |
| 106 | 曾参杀人 | | (88) | 133 | 谄谀于利 | | (109) |
| 107 | 自知之明 | | (89) | 134 | 国有三不祥 | | (110) |
| 108 | 海大鱼 | | (90) | 135 | 晏子逐高僚 | | (111) |
| 109 | 淳于髡荐贤 | | (91) | 136 | 尹绰与赦豚 | | (112) |
| 110 | 支公好鹤 | | (91) | 137 | 秦西巴释麌 | | (112) |
| 111 | 周处 | | (92) | 138 | 白龙下清冷之渊 | | (113) |
| 112 | 鹰 | | (93) | 139 | 鲁哀侯弃国 | | (113) |
| 113 | 三重楼喻 | | (94) | 140 | 鸟东徙 | | (114) |
| 114 | 说人喜嗔喻 | | (95) | 141 | 甘戊渡河 | | (114) |
| 115 | 杀群牛喻 | | (95) | 142 | 羊蒙虎皮 | | (115) |
| 116 | 夫妇食饼喻 | | (96) | 143 | 失其故步 | | (115) |
| 117 | 石牛粪金 | | (97) | 144 | 曲突徙薪 | | (115) |
| 118 | 猴子捞月 | | (97) | 145 | 未尝一遇 | | (116) |
| 119 | 分鲤 | | (98) | 146 | 钓鱼 | | (117) |
| 120 | 顿娘传 | | (99) | 147 | 燕雀 | | (117) |
| 121 | 哀溺文 | | (100) | 148 | 四方之志 | | (118) |
| 122 | 鞭贾 | | (101) | 149 | 楚弓楚得 | | (119) |
| 123 | 水州铁炉步志 | | (102) | 150 | 众盲摸象 | | (119) |
| 124 | 指鹿为马 | | (103) | 151 | 华歆和王朗 | | (120) |
| 125 | 攘田者 | | (103) | 152 | 孔群好饮 | | (120) |
| 126 | 两头蛇 | | (104) | 153 | 望梅止渴 | | (121) |
| 127 | 晋平公游西河 | | (105) | 154 | 王蓝田吃鸡蛋 | | (121) |
| 128 | 反裘负刍 | | (105) | 155 | 辽东白头猪 | | (122) |
| 129 | 熊渠子射石 | | (106) | 156 | 愚人食盐喻 | | (122) |

| | | | | | | | |
|-----|---------|----|-------|-----|---------|----|-------|
| 157 | 医与王女药喻 | …… | (123) | 184 | 种树郭橐驼传 | …… | (142) |
| 158 | 乘船失鉢喻 | …… | (123) | 185 | 梓人传 | …… | (144) |
| 159 | 欲食半饼喻 | …… | (124) | 186 | 猿与王孙 | …… | (145) |
| 160 | 口诵乘船法喻 | …… | (124) | 187 | 南柯太守传 | …… | (147) |
| 161 | 啄米决口喻 | …… | (125) | 188 | 野庙碑 | …… | (159) |
| 162 | 对牛弹琴 | …… | (126) | 189 | 说天鸡 | …… | (160) |
| 163 | 说麒麟 | …… | (126) | 190 | 荆巫 | …… | (161) |
| 164 | 狂泉 | …… | (127) | 191 | 乘凉 | …… | (162) |
| 165 | 钻火 | …… | (127) | 192 | 蒲元识水 | …… | (162) |
| 166 | 富者乞羊 | …… | (128) | 193 | 卖油翁 | …… | (163) |
| 167 | 阿豺命子弟折箭 | …… | (128) | 194 | 请君入瓮 | …… | (164) |
| 168 | 徒手搏虎 | …… | (129) | 195 | 伤仲永 | …… | (164) |
| 169 | 岑鼎 | …… | (129) | 196 | 日喻 | …… | (165) |
| 170 | 刻凤凰 | …… | (130) | 197 | 虎与小儿 | …… | (166) |
| 171 | 刺猬与橡子 | …… | (130) | 198 | 三老语 | …… | (167) |
| 172 | 杯弓蛇影 | …… | (131) | 199 | 桃符与艾人 | …… | (167) |
| 173 | 嗜痂 | …… | (132) | 200 | 蛤蟆夜哭 | …… | (168) |
| 174 | 王皓失马 | …… | (132) | 201 | 鬼怕恶人 | …… | (168) |
| 175 | 打蚊 | …… | (133) | 202 | 齐王赐药 | …… | (169) |
| 176 | 毛颖传 | …… | (133) | 203 | 辛垣衍 | …… | (170) |
| 177 | 骂尸虫文 | …… | (136) | 204 | 冢宰奇画 | …… | (171) |
| 178 | 大鲸 | …… | (137) | 205 | 公孙龙夸事 | …… | (172) |
| 179 | 李赤传 | …… | (137) | 206 | 营丘士 | …… | (173) |
| 180 | 临江之麋 | …… | (139) | 207 | 痴人说梦 | …… | (174) |
| 181 | 黔之驴 | …… | (140) | 208 | 草书大王 | …… | (174) |
| 182 | 永某氏之鼠 | …… | (141) | 209 | 斗牛图 | …… | (175) |
| 183 | 黠说 | …… | (142) | 210 | 两本《圣教序》 | … | (176) |

| | | | | | |
|-----|--------|-------|-----|-------|-------|
| 211 | 蝴蝶 | (176) | 238 | 割癩 | (195) |
| 212 | 秦土好古 | (177) | 239 | 僰人舞猴 | (196) |
| 213 | 眉眼口鼻争能 | (177) | 240 | 除草 | (196) |
| 214 | 故相远派 | (178) | 241 | 郑有踝人 | (197) |
| 215 | 戒虎文 | (178) | 242 | 菟丝与薜荔 | (197) |
| 216 | 铁杵磨针 | (179) | 243 | 畏鬼致盜 | (199) |
| 217 | 囫囵吞枣 | (180) | 244 | 窃糟 | (199) |
| 218 | 千里马 | (180) | 245 | 东海黄公 | (200) |
| 219 | 良桐之琴 | (181) | 246 | 卖柑者言 | (201) |
| 220 | 蜀贾卖药 | (181) | 247 | 人虎说 | (202) |
| 221 | 九尾狐 | (182) | 248 | 寒号虫 | (203) |
| 222 | 南山之蛟 | (183) | 249 | 中山狼传 | (204) |
| 223 | 象虎 | (184) | 250 | 鶗鴂鸟 | (210) |
| 224 | 蟾蜍与蚂蚁 | (185) | 251 | 自出机杼 | (211) |
| 225 | 道士救虎 | (186) | 252 | 探玄珠 | (211) |
| 226 | 狡服 | (186) | 253 | 假人 | (212) |
| 227 | 医缓 | (187) | 254 | 打草惊蛇 | (213) |
| 228 | 济阴贾人 | (188) | 255 | 虎伥 | (213) |
| 229 | 蒙人叱虎 | (188) | 256 | 病忘 | (214) |
| 230 | 狙公失狙 | (189) | 257 | 牡羊 | (215) |
| 231 | 中山猫 | (190) | 258 | 噬犬 | (215) |
| 232 | 九头鸟 | (191) | 259 | 神相 | (216) |
| 233 | 若石 | (191) | 260 | 解铃系铃 | (217) |
| 234 | 蹶叔 | (192) | 261 | 河阳猪 | (217) |
| 235 | 诟食者 | (193) | 262 | 猩猩 | (218) |
| 236 | 亥石戒酒 | (194) | 263 | 绘像与真父 | (219) |
| 237 | 雉与蛇 | (195) | 264 | 牧竖拾金 | (220) |

| | | | | | | | |
|-----|------|-------|-------|-----|-------|-------|-------|
| 265 | 多忧 | | (220) | 278 | 车夫 | | (236) |
| 266 | 修屋漏 | | (221) | 279 | 龙 | | (236) |
| 267 | 矮坐头 | | (222) | 280 | 黑兽 | | (237) |
| 268 | 东坡肉 | | (222) | 281 | 螳螂捕蛇 | | (238) |
| 269 | 红米饭 | | (223) | 282 | 大鼠 | | (239) |
| 270 | 任事 | | (223) | 283 | 狼(三则) | | (240) |
| 271 | 催科 | | (224) | 284 | 老面鬼 | | (242) |
| 272 | 妾心 | | (225) | 285 | 曹竹虚言 | | (243) |
| 273 | 知无涯 | | (226) | 286 | 河中石兽 | | (244) |
| 274 | 劳山道士 | | (227) | 287 | 鬼有三技 | | (245) |
| 275 | 画皮 | | (230) | 288 | 冉氏烹狗 | | (246) |
| 276 | 武技 | | (233) | 289 | 成衣匠 | | (247) |
| 277 | 牧竖 | | (235) | 290 | 宝石 | | (248) |

1 楚王好细腰

从前，楚灵王喜欢人腰身纤细。因此，他手下的大臣，一个个害怕自己腰肥体胖，失去宠信。于是，一日三餐，都减为只吃一餐。每天穿衣服，也都要先屏住呼吸，然后把腰带束紧。这样，时间一久，便一个个饿得头昏眼花，必须扶住墙壁才能站立起来。

一年以后，满朝文武都饿成了面黄饥瘦的废物。

(墨子)

2 五十步笑百步

梁惠王问孟子：“我治理国家，可说是尽心尽意了。河内的收成不好，我就把那里的一部分老百姓迁移到河东去，并且把河东的一部分粮食运到河内来。河东的收成不好，我也这样做。邻国的当政者有哪…个能象我这样诚心诚意地替老百姓着想？但是，邻国的百姓没有减少，我的百姓也没有增多，这是什么原因呢？”

孟子回答说：“大王喜欢打仗，我就用打仗来打个比方吧。战鼓擂得咚咚地响，战斗的双方短兵相接。这时就有人丢盔弃甲，拖着兵器逃跑。有的跑了一百步停下来，有的跑

了五十步就停下来。因为自己只跑了五十步就嘲笑那些跑了一百步的，那怎么样呢？”

梁惠王说：“不行，只是没跑到一百步罢了，但无论五十步还是一百步，这都是逃跑呀！”

孟子说：“您如果懂得这一点，那么就不要再希望你的百姓比邻国多了！”

(孟子)

3 揠苗助长

宋国有个农夫，是个急性子的人。他总嫌田里的禾苗长得太慢，恨不得下种三天就收割；可是禾苗还是一天天慢慢生长，农夫为这事天天发愁。

有一天，他忽然想出个主意，就急急忙忙跑到田里，把满地的禾苗一棵棵地都拔高了一节。他忙忙碌碌整整拔了一天，太阳快下山了，才筋疲力尽地回家去。

一进家门，他就得意地对家里人说：“啊呀！今天可把我累坏了！你们猜我干啥去了？我帮田里的禾苗长高了。”

他的儿子听了，摸不着头脑，急忙跑到田里一看，禾苗全都枯死了。

(孟子)

4 齐人乞墦

有个齐国人，与一妻一妾一起生活。他每次外出，总是酒足饭饱才回家。妻子问他和谁一起吃喝，他答的都是一些富貴人家。

妻子听了，感到奇怪，就与妾商量说：“丈夫每次出门，一定吃饱喝足才回来，问他跟什么人一起吃喝，他说的都是些有钱有勢的人，可我们家从没见阔人来过。我想悄悄跟着，看他究竟到哪些地方去。”

第二天，她起了个大早，躲躲闪闪跟在丈夫后面走。走遍了全城，也不见有人站住和她丈夫说句话。最后，见他走到了东门外坟地里，向上坟的人乞讨祭奠后的酒食。讨了一家吃不够，又东张西望到别家去讨。原来，这就是他酒足饭饱的办法！

他妻子气愤地跑回家，把看到的情况一五一十地都告诉了妾，并说：“丈夫是我们终身指望和依靠的人，谁想到他现在竟是这样！”于是，两人在院子里一边骂，一边哭。而那位当丈夫的却还不知道，依然洋洋自得地从外面回来，在妻妾面前摆他的臭架子。

在明白事理的人看来，人们用来追求名利地位的手段，不使他们的妻妾感到羞耻而一起哭泣的，怕是很少的吧！

(孟子)

5 子产被骗

郑国的宰相子产是一个聪明人物。有一次，有人给他送来一条活鱼，那鱼金翅金鳞，十分好看。子产见了，很高兴，就把鱼交给家丁，让他放养到花园的水池子里。

那个家丁又馋又狡猾，他趁子产不在眼前的时候，偷偷地把那条鱼煎着吃了。等子产回来，他就编造了一段谎话，欺骗子产说：“老爷，按您的吩咐，我把那条鱼放到水池子里去了。啊呀，那才有意思呢！刚把它放进水里时，它呆呆地直愣神，好象没弄清是怎么一回事儿；过了不大一会儿，它才象忽然明白过来，撒着欢儿，一甩尾巴就钻进水里去了。在水里摇头摆尾，游得可快活了。”

他讲得活灵活现，子产信以为真，高兴地说：“这下可好了，它可找着个合适的地方了！”那个狡猾的家丁听了，心中暗笑，事后还洋洋得意地对人说：“都说子产聪明，这次可上当了。”

看来，漏洞百出的谎话容易识别，活灵活现的谎话却容易使人上当，这更值得人们警惕！

(孟子)

6 两入学奕

从前，有个很会下棋的人，名叫奕秋，是当时全国最著名的棋手。有两个年轻人慕名前来，拜奕秋为师，跟他学习下棋。

这天，奕秋正在讲学。大徒弟聚精会神地听讲，耳朵里只听着奕秋讲的话，字字句句都记在心里。小徒弟呢？虽然也坐在那儿听，可是听着却分了神，眼睛离开了棋盘，紧盯着窗外远飞的大雁，耳边好象隐隐约约听到了大雁的叫声。他不由得心里想：大雁快飞过来了吧！我要是弯弓搭箭，“噌”地一声射下一只那多好哇！……

两个徒弟就这样一同学棋。过了几年，大徒弟技艺精进，成了高超的棋手；而小徒弟呢，却远远地落在了后边。难道是小徒弟的才智不及人家吗？我看不是这样的。

(孟子)

7 激流兜水

孔子在吕梁山游玩，~~望~~吕梁山的石壁，看见石壁上挂着奔腾而下的瀑布，高有二十四丈，水沫飞迸到四十里远近，水势险急，大鱼大鳖都不敢在这里游动。

忽然，孔子看见一个汉子在这激流中一出一没，以为他有痛苦的事情想要自杀，就叫学生沿着流水去设法搭救。

那汉子在激流里游了几百步，忽然跳了出来，披散着头发，一面唱歌，一面漫游在河堤下。孔子见了这情形，觉得奇怪，就上前问道：“看见你在那惊涛骇浪中悠然自得，我还以为你是鬼呐！现在仔细看看，你也是个普通的人啊！请问，你为什么能在激流中游得这样好呢？”

那汉子听了，回答说：“哪里，我没什么技术，我所依靠的是从小住在这个地方，经常下水游泳，熟习水性，能顺着漩涡沉入水里，随着涌波浮出水面，按着流水的规律凫水，绝不任性，绝不勉强，这就是我能够在激流中凫水的道理。”

(庄子)

8 不皲手之药

宋国有一户人家，一年到头靠漂洗丝棉过日子。他家有个祖传秘方，能配制不皲手的药。一到冬天，天寒水冷，别人都怕皲手，只有他家照样漂洗，从不歇工。

有个外乡人听说了这个消息，就请求用高价购买这秘方。这个宋国人便召集整个家族商量。他说：“我们世世代代漂洗丝棉，赚不了几个钱。今天卖掉这药方，就能一下子赚得一笔巨款，还是卖给他吧！”

外乡人得到了药方，就去游说吴王。这时，恰好越国来

攻打吴国，吴王叫这个人统率军队。数九寒天，与越人水战，吴军涂了那药，手脚再不冻裂，把越人打得一败涂地。战后，吴王封给他土地，让他做大官。

同样一个药方，宋国人墨守成规，只能派个小用场，用来漂洗丝棉；可是那个外乡人却能灵活运用，靠它赢得了战争的胜利。

(庄子)

9 庖丁解牛

一个名叫丁的厨师替文慧君宰牛。他手触肩抗、脚踩膝顶，动作优美协调，很象商汤时代的《桑林》舞蹈；刀进牛身，骨肉分离，声响没有一点不合音律的，完全符合尧时代《经首》乐章的节奏。

文慧君看了，赞叹说：“妙啊！你的技术怎么会高明到这种地步呢？”

厨师放下刀说：“我所爱好的是掌握事物的规律，这比掌握技术要更进一步。我初学宰牛的时候，不了解牛体的结构，眼中看到的尽是一头头整牛，不知道该从哪儿下刀。三年以后，对牛体结构熟悉了，心目中也就没有全牛了。现在我宰牛，只用精神去同牛接触，已不需要眼睛观察，全凭心理活动就能指挥手脚动作。我按照牛体的生理结构，从筋骨相连的隙缝地方进刀，然后顺着骨节间的一个个窍穴解剖。

刀锋所过之处，都是牛体原有的空隙，从不碰牛的筋脉骨肉，更不用说大骨了。技术高明的厨师一年换一把刀，是因为他们随便用刀割肉。一般的厨师一月就换一把刀，是因为他们经常用刀砍骨头。现在我的刀已经用了十九年，宰了数千头牛，刀口还是象新磨出来的一样锋利。牛的骨节是有空隙的，而刀口却薄得好象一点厚度都没有。用极薄的刀口插入有空隙的骨节之中，自然就显得十分宽绰，有足够的活动余地了。所以，十九年过去了，我的刀还是象新的一样。尽管这样，每当碰到筋骨交错的地方，我见这里难于宰割，总是分外小心警惕，眼光集中，动作放慢，轻轻地动刀，直到牛骨与牛肉迅速分离，好象一堆泥土散在地上一样，我才提着刀站起来，轻松地四面望望，心满意足，将刀擦干净放入鞘中。”

文惠君一听，连声称赞：“讲得太好了！我听了您的一席话，懂得了养生的大道理。”

(庄子)

10 斥鷀笑鹏

在那遥远的北方，有块不毛之地，那里有个无边无际的大海，叫做天池。天池里有一条大鱼，身子宽达几千里，没有人知道它有多长，它的名字叫鲲。鲲一变就成了鸟，鸟的名字叫鹏，背象泰山，翅象悬挂在天空的云块。大鹏鸟乘着